❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर

MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध
रु. ~~2200~~ 1100/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
9650183336, 9540040339

वर्ष 47, अंक 17 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 मार्च, 2024 से रविवार 17 मार्च, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 4
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर कृतज्ञ राष्ट्र का शत-शत नमन

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024 सदैव सत्य

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के अन्तर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं टंकारा ट्रस्ट के सहयोग से महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में तीन दिवसीय

200वां जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव सम्पन्न

जन्मघर की यज्ञाग्नि से करसन जी के आंगन की यज्ञशाला में आरम्भ हुआ चतुर्वेद पारायण यज्ञ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक अवसर
– श्रीमती द्रोपदी मुर्मु, भारत की माननीय राष्ट्रपति

राष्ट्र चेतना के ऋषि थे स्वामी दयानन्द : वेदों की ओर लौटो था उनका प्रमुख संदेश – नरेन्द्र मोदी

टंकारा में ज्ञान ज्योति तीर्थ स्मारक के निर्माण से होगा नई चेतना का उदय – आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात

200वें जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव के विस्तृत विचार, समाचार एवं चित्रमय झांकी विशेषांक के रूप में शीघ्र ही प्रकाशित की जाएगी।

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में

आर्य परिवार

होली मंगल मिलन समारोह

फाल्गुन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् 2080 तद्नुसार 24 मार्च, 2024 सायं 3-30 से 7-15 बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,
राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1

नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-30 बजे | विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति | बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम

पुष्पों द्वारा होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : 7-15 बजे

इस अवसर पर आपसे निवेदन है कि :-

होली मंगल मिलन के इस समारोह में आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर
समारोह की शोभा को बढ़ाएं तथा अन्य परिचित मित्रों एवं आर्य परिवारों को विशेष रुप से आमंत्रित करें।

नागरिकता संशोधन अधिनियम (सी.ए.ए.) लागू करने का स्वागत करता है आर्यसमाज

पाकिस्तान-बांग्लादेश और अफगान के अल्पसंख्यक शरणार्थियों को मिलेगी भारत की नागरिकता

देश हित में अधिनियम लागू करने के लिए भारत सरकार को हार्दिक शुभकामनाएं

सम्बन्धित सूचना एवं समाचार पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

प्रभो! मेरी पुकार सुन

वेद-स्वाध्याय

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। -ऋ. 6/47/11
ऋषिः गर्गः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - त्रातारं इन्द्रम्= पालन करने वाले इन्द्र को, **अवितारं इन्द्रम्**= रक्षा करनेवाले इन्द्र को **हवे हवे सुहवम्**= एक-एक संग्राम में सुख से पुकारने योग्य **शूरं इन्द्रम्**=पराक्रमी इन्द्र को और **शक्रं इन्द्रम्**=सर्वशक्तिमान् इन्द्र को **पुरुहूतं इन्द्रम्**=जिसे असंख्यों सत्पुरुषों ने समय-समय पर पुकारा है-उस इन्द्र को मैं भी **ह्वयामि**=पुकारता हूं, बुलाता हूं। **मघवा इन्द्रः**=वह ऐश्वर्यवान् **इन्द्र नः स्वस्ति धातु**=हमारा कल्याण करे।

विनय- यह संसार एक रणस्थली है। इसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी समझ के अनुसार किसी-न-किसी विजय को पाने में लगा रहता है और उसके लिए दिन-रात संघर्ष में लग जाता है। यद्यपि इन संघर्षो में विजय पाने के लिए मनुष्य प्रायः अपने शरीर-बल, बुद्धि-बल, संगठन-बल, विज्ञान-बल, मित्र-बल, सैन्य-बल आदि बलों का प्रयोग करता हुआ अभिमान से समझता है कि मैं इन बलों द्वारा ये सब लड़ाइयाँ जीत लूँगा, परन्तु एक समय आता है जब मनुष्य इन सब बाह्य-बलों से हारकर, निराश होकर, संसार की किसी अज्ञात शक्ति को ढूंढने व पुकारने लगता है। 'हे राम', या 'अल्लाह' या 'O my God' आदि कहकर किसी-न-किसी नाम से, हे इन्द्र! असल में वह तुझे पुकार उठता है। तब पता लगता है कि, हे संसार की अज्ञात, अदृष्य शक्ते! तू ही एकमात्र शक्ति है। संसार के शेष सब बल तेरे ही आधार से बल हैं। जब तू चाहता है तब वे बल होते हैं, जब तेरी इच्छा नहीं होती तब किसी भी बल में शक्ति नहीं रहती। इसलिए, हे इन्द्र! तू ही मेरा सच्चा पालक है ओर तू ही एकमात्र सब आपत्तियों से मेरा रक्षक है। तुझ ही महापराक्रमी को हर संग्राम में पुकारना चाहिए। तेरा ही पुकारना शोभन है, सुफलदायक है और किसी को पुकारना निष्फल है, बेकार है। पुकारा हुआ तू भक्तजनों के संकट एक क्षण में दूर कर देता है। तू सर्व शक्तिमान् है। अतएव तू 'पुरुहूत' है, सदा से जबसे सृष्टि चली है सन्त लोग तुझे आड़े समय में पुकारते रहे हैं, याद करते रहे हैं। हे शक्र! तुझे छोड़कर मनुष्य और किसे पुकारे? इसलिए, हे इन्द्र! मैं भी तेरी पुकार मचा रहा हूं। मघवन्! तू मेरे लिए कल्याणकारी होता हुआ मेरी पुकार सुन। मैं निश्चय से जानता हूं कि मैं तेरा पवित्र नाम लेता हुआ अपने इस जीवन की सब लड़ाइयों में विजय पाता चला जाऊँगा। मुझे किसी युद्ध में किसी भी अन्य हथियार की आवश्यकता नहीं। बस, तू मेरी वाणी पर रहे, यही चाहिए। तेरा नाम पुकारना मुझे सब विपत्तियों से पार कर देगा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ज्ञान ज्योति तीर्थ का शिलान्यास

टंकारा ऋषि भूमि तीर्थ स्थान जरुरी क्यों ?

ज्ञान-ज्योति तीर्थ टंकारा की भूमि पर लगभग 250 करोड़ की लागत से जन-जन को नई दिशा देने वाला, नई चेतना, नई ऊर्जा और ज्ञान का एक बड़ा केंद्र तैयार होगा। महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव-ज्ञान ज्योति पर्व स्मरणोत्सव समारोह से जब यह घोषणा हुई तो सुरेशचंद्र आर्य, पद्मश्री पूनम सूरी, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, सुरेन्द्र कुमार आर्य, अजय सहगल, प्रकाश आर्य सहित कई अग्रणी, आर्य समाज संस्थान के ट्रस्टी, स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं समेत हजारों लोगो की तालियों की गडगडाहट से समूचा समारोह स्थल गूंज उठा। घोषणा करते हुए गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि ज्ञान ज्योति तीर्थ स्मारक के लिए टंकारा हाइवे पर 15 एकड़ जमीन चिह्नित कर ली गई है। इस कार्य को मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में सरकार का भी सहयोग मिलेगा।

यह अवसर था पिछले महीने की 10 फरवरी से 12 फरवरी 2024 तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मस्थल टंकारा, जिला मोरबी, गुजरात में, महर्षि दयानन्द जी के 200वें जन्मोत्सव-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव का, जब भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और राज्यपाल आचार्य देवव्रत, मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने करसन जी के आंगन में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ में आहुति दी थी।

शायद यही कारण रहा टंकारा जन्मोत्सव कार्यक्रम में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने विडियो कांफ्रेंस भाषण में कहा कि इतिहास में कुछ दिन, कुछ क्षण, कुछ पल ऐसे आते हैं, जो भविष्य की दिशा को ही बदल देते हैं। आज से 200 वर्ष पहले दयानन्द जी का जन्म ऐसा ही अभूतपूर्व पल था। ये वो दौर था, जब गुलामी में फंसे भारत के लोग अपनी चेतना खो रहे थे। स्वामी दयानन्द जी ने तब हमें बताया कि कैसे हमारी रूढ़ियों और अंधविश्वास ने देश को जकड़ा हुआ है। इन रूढ़ियों ने हमारे वैज्ञानिक चिन्तन को कमजोर कर दिया था। इन सामाजिक बुराइयों ने हमारी एकता पर प्रहार किया था। समाज का एक वर्ग भारतीय संस्कृति और आध्यात्म से लगातार दूर जा रहा था। ऐसे समय में, स्वामी दयानन्द जी ने 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान किया। उन्होंने वेदों के भाष्य लिखे, तार्किक व्याख्या की। उन्होंने रूढ़ियों पर खुलकर प्रहार किया और बताया कि भारतीय दर्शन का वास्तविक स्वरूप क्या है। इसका परिणाम ये हुआ कि समाज में आत्मविश्वास लौटने लगा। लोग वैदिक धर्म को जानने लगे, और उसकी जड़ों से जुड़ने लगे।

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू जी ने कहा "स्वामीजी ने 19वीं सदी के भारतीय समाज में प्रचलित अंधविश्वास और बुरे रीति-रिवाजों को खत्म करने की चुनौती उठाकर उन्होंने विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करते हुए बाल विवाह और बहुविवाह का जोरदार विरोध किया। वह नारी शिक्षा और नारी स्वाभिमान के मुखर समर्थक थे।"

गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने भी कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म स्थान टंकारा को राज्य सरकार भव्य तीर्थस्थल के रूप में विकसित करेगी ताकि पूरी दुनिया के लोग उनकी आध्यात्मिक चेतना का लाभ उठा सकें।

ऐसे में सवाल बना कि कैसा तीर्थ स्थल बनेगा? वहां क्या होगा? कई सवाल लोगों के मन में उभरे। क्या हरिद्वार जैसा तीर्थ स्थल बनेगा, या फिर काशी और उज्जैन जैसा? क्या लोग चढ़ावा चढ़ाने के लिए आयेंगे या फिर पाप से मुक्ति की आस का अंधविश्वास मन में लेकर? आखिर कैसा होगा यह तीर्थ स्थल? आदि-इत्यादि सवाल मन में उफनने लगे! क्योंकि जिस देश में नदियां तीर्थ हैं, नदियों के संगम तीर्थ हैं, पर्वत तीर्थ हैं। ऋषियों-मुनियों, तपस्वियों ने जहां तप किया है, वह पुण्यस्थली तीर्थ है। जहां सुरम्य और सघन वृक्षों से युक्त तट वाले जलाशय, कूप, और पोखर भी तीर्थ हैं तो कैसा होगा टंकारा का ज्ञान ज्योति तीर्थ?

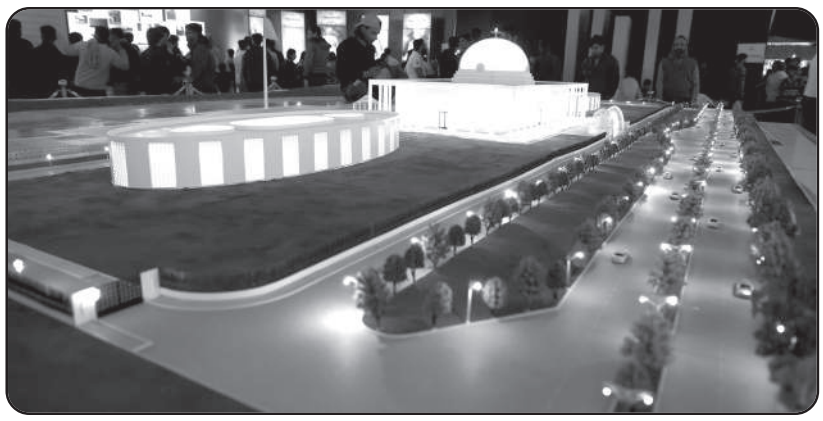

हालाँकि तीर्थ बड़ा ही सुन्दर शब्द है, और इसके अपने ही बहुत मायने है, तीर्थ दो शब्दों का योग है तीर+अर्थ, पहले शब्द तीर का यहाँ पर मतलब है 'किनारा' और अर्थ के बहुत सारे अर्थ है लेकिन यहाँ इसका मतलब है 'पार'। साधारण बोलचाल की भाषा में इसे पुल कहते हैं लेकिन अध्यात्मिक जगत में तीर्थ का बड़ा ही गहन अर्थ है। तीर्थ का अर्थ है जो इस किनारे से उसे किनारे तक पहुंचने की राह दिखा दे, वही तीर्थ है। इस कारण स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्मस्थान को तीर्थ के रूप में विकसित किया जाना होगा। ताकि समाज और इस राष्ट्र उस पार ले जाए जहाँ अभी इसका मार्ग बाकी है।

जरूरी नहीं है जहाँ अस्थियाँ विसर्जित की जाती है वही तीर्थ है। जरूरी नहीं कि जहाँ इन्सान पाप धोने के लिए, नदी में गोते लगाये वही तीर्थ है। तीर्थ का अर्थ है गुरुसेवा तथा उनका आज्ञापालन, सत्शास्त्रानुशीलन, पिता-माता की सेवा, दया, करुणा और इन सबसे बढ़कर सर्वोत्तम तीर्थ है आत्मतीर्थ। वही आत्मतीर्थ जिसे समझाने के लिए स्वामीजी काशी, मथुरा, हरिद्वार से नगर-नगर और जन-जन तक पहुंचे। किन्तु ज्ञान के तीर्थो को अंधविश्वास और पाखंड के तीर्थ बना चुके कुछ लोगों को आत्मतीर्थ से भय था। इस कारण स्वामी जी बार जहर देने का प्रयास किया और अंत में सफल भी हुए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उस दौर में पाखंड के खिलाफ आवाज उठाई, जब इन पर बात करना भी वर्जित था। उस वक्त भारत में ज्ञान और धर्मस्थलों पर पाखंड का बोल-बाला था, अंधविश्वास चरम पर था और समाज का बड़ा वर्ग दिशाहीन अवस्था में कार्य-व्यवहार कर रहा था। इन तीर्थ स्थलों को इनका प्राचीन स्वरूप स्मरण कराने के लिए ही वर्ष 1867 हरिद्वार कुंभ में स्वामी दयानन्द सरस्वती पाखंड खंडनी पताका फहरा संन्यासी योद्धा बने थे। पाखंड खंडनी पताका को फहराकर इन्हें समाप्त करने के अपने संकल्प को जनांदोलन बना दिया।

अगर आज तीर्थ स्थानों के संदर्भ में देखे तो काशी के पिशाचमोचन मोहल्ले में हर साल पितृपक्ष में बकायदा भूतों की मंडी लगती है। भूतों को बैठाने के नाम पर मोल-भाव शुरू हो गया है। भूतों से मुक्ति दिलाने के नाम पर रुपये ऐंठने वालों का एक बड़ा जत्था शहर भर में घूम रहा है। भूतों से मुक्ति पाने की शर्त होती है इलाज के नाम पर गाली-गलौज झेलने और हद तक मारपीट सहने की ताकत भी होनी चाहिए।

जो काशी कभी ज्ञान-विज्ञान और धर्म की नगरी थी आज कई मायनों में पाखंड अंधविश्वास की नगरी बन चुकी है। उज्जैन की बात करें तो जिस उज्जैन में महर्षि संदीपनी के आश्रम में स्वयं योगेश्वर श्रीकृष्ण ने शिक्षा पाई आज उस उज्जैन में कथित भूतड़ी अमावस्या मौके पर भूतों का मेला लगता है। प्रेत बाधाएं दूर हो जाती हैं। इसलिए हजारों अंधविश्वास से पीड़ित लोगों का यहाँ जमावड़ा लगता है। *- शेष पृष्ठ 6 पर*

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में तीन दिवसीय

200वां जन्मोत्सव–स्मरणोत्सव सम्पन्न

वैदिक संस्कृति में जन्मोत्सव मनाने की परंपरा सदा से महत्वपूर्ण रही है। किन्तु जब विश्व के महापुरुषों में अग्रणी, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती का अवसर हो तो उनके महान उपकारों का स्मरणोत्सव विशाल, विराट और भव्य स्तर पर होना स्वाभाविक ही था। यह सर्वविदित ही है कि महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर दो वर्षीय आयोजनों की वृहद श्रंखला का शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम से प्रारंभ होकर पूरे देश और दुनिया में लगातार सफलता पूर्वक गतिशील है। इसी बीच 10 से 12 फरवरी 2024 तक महर्षि की 200वीं जयन्ती का ऐतिहासिक आयोजन उनकी जन्मभूमि टंकारा गुजरात में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास के वातावरण में कई विशेष कीर्तिमानों की अपार सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी, यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र भाई पटेल जी ने कृतज्ञ राष्ट की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का भावपूर्ण स्मरण किया और आर्य समाज को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान की। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी, डीएवी मैनेजिंग कमेटी के प्रधान पदमश्री पूनम सूरी जी, 200वीं जयन्ती आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, भारत की सभी प्रान्तीय सभाओं के सम्मानित प्रधान, मंत्री एवं अधिकारीगणों सहित अमेरिका, मारीशस, म्यांमार, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के अधिकारी, प्रतिनिधि पूरे तीन दिनों के कार्यक्रमों में सक्रीय रहे। संपूर्ण कार्यक्रमों में डीएवी स्कूलों, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, वानप्रस्थ आश्रमों, महिला आश्रमों, आर्य विद्यालयों और टंकारा के क्षेत्रीय युवक- युवतियों की भारी संख्या में उपस्थिति अत्यंत प्रशंसनीय रही।

मनोहारी और प्रेरक साज-सज्जा से प्रफुल्लित हुए आर्यजन

लगभग 25 एकड़ भूमि पर आयेजित विशाल कार्यक्रम स्थल को पूरे सुनियोजित तरीके से सजाया गया था। अत्यंत दिव्य और भव्य मुख्य द्वार को महर्षि के पिता करसन जी के आंगन की संज्ञा सभी के मन को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। प्रवेश करते ही बाईं ओर आगंतुक महानुभावों के लिए आवासीय व्यवस्था एवं अन्य समस्त जानकारियों हेतु कार्यालय निर्मित किए गए थे और दाई ओर जन सुविधाओं का स्थान था। लेकिन द्वार के बिल्कुल सामने महर्षि की महान देन "नमस्ते" का संदेश देता हुआ चित्र शोभायमान था। जहां सभी लोग एक दूसरे को नमस्ते करते हुए सेल्फी ले रहे थे। उसके आगे महर्षि दयानन्द का रेत पर उकेरा हुआ चित्र और 200वीं जयन्ती का लोगो सबको प्रेरित कर रहा था। जिसके दाईं ओर जल व्यवस्था का सुंदर स्टाल लगाया गया था। उसके आगे जलपान, भोजन आदि की दुकानें लगी हुई थी। इसके साथ ही विचार टीवी द्वारा प्रोजेक्ट पर निरन्तर महर्षि दयानन्द सरस्वती और

आर्य समाज की विचारधारा पर आधारित फिल्में प्रसारित होती रही, जिनको देखकर आर्यजन प्रेरणा लेते रहे। उसके आगे आर्य समाज के वैदिक साहित्य का विशाल पुस्तक बाजार लगाया गया था, जो तीनों दिन आर्यजनों से भरा रहा, वैदिक साहित्य की आर्यजनों ने भरपूर खरीदी की। उसके आगे महर्षि दयानन्द के सेवाकार्यों और उनके अमर क्रांतिकारी, समाज सुधारक और अनुयाई शिष्यों, तथा उनके प्रति महापुरुषों के विचारों की सुंदर और प्रेरक प्रदर्शनी लगी थी, जिसे स्वयं राष्ट्रपति सहित सभी आगंतुक महानुभावों ने देखा और प्रेरणा ली। इसी सुंदर और प्रेरक प्रदर्शनी स्थल पर टंकारा में बनने वाले महर्षि दयानन्द जी के स्मारक का मॉडल भी था जिसे देख-देखकर लोग बहुत ही प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे।

इसके बाईं और बाहर मैदान में भी महर्षि केजीवन से जुड़ी लगभग समस्त जानकारी चित्रों के साथ सुसज्जित थी। जिसे सभी आर्य जन लगातार तीनों दिन पढ़ते रहे, देखते रहे। बीच-बीच में सेल्फी प्वांइट बनाए गए थे, जहां हर आयु वर्ग के स्त्री-पुरुषों द्वारा फोटो लेने की होड मची रही। इसके साथ ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दिव्य आकृति विशेष आकर्षण का केंद्र बनी रही, जहां महर्षि दयानन्द लेखन करते हुए दिखाए गए थे। छायाचित्र के चहुंओर चारों वेद और उनके द्वारा रचित ग्रंथों को प्रदर्शित किया गया था। इस दिव्य स्थान पर सबसे ज्यादा फोटो लेने वालों की भीड तीनों दिन लगी रही। इसके बाईं ओर सुंदर बैलों की जोड़ी और बग्घी सबके मन को मोह रही थी। महर्षि की बाल्यावस्था को प्रदर्शित करता उनका घर और घर के सदस्यों का मंचन अपने आप में अनुपम सिद्ध हो रहा था। उसके साथ ही अनेक तरह के उपयोगी सामान और बीजों की प्रदर्शनी से भी लोग लाभान्वित हो रहे थे। साथ में बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के झूले और रेलगाडी लगाई गई थी। जहां प्रतिदिन हजारों बच्चे आनन्द लेते रहे।

इसके ठीक सामने भव्य व्यायाम स्थल निर्मित किया गया था, जहां प्रात:काल योगासन, प्राणायाम और व्यायाम की कक्षाओं का आयोजन किया गया। इसी स्थान पर महर्षि की जयन्ती पर 200 की आकृति में बृहद यज्ञ किया गया और आर्य वीर दल, वीरांगना दल का विशेष व्यायाम प्रदर्शन अत्यंत प्रेरक और सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। इसके सामने ही विशाल यज्ञशाला स्थित थी, जहां पर भारत की राष्ट्रपति जी सहित सभी महानुभावों ने यज्ञ में आहुति प्रदान की। लगातार तीन दिनों तक वृहद यज्ञ चलता रहा। इसके साथ ही 200वीं जयन्ती के मुख्य आयोजन का पंडाल बड़ा विशाल और आकर्षक था। इसके बाईं और बिल्कुल सामने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए स्थल बनाया गया था। जहां पर भव्य मंच और सुंदर लाइटिंग और हजारों लोगों के बैठने के लिए कुर्सियों की व्यवस्था की गई थी। इसी स्थान पर प्रतिदिन सायंकाल एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुए। 11 फरवरी 2024 को सायंकाल डीएवी के विभिन्न सकूलों के बच्चों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के लोकोपकारी जीवन पर अधारित एक प्रेरक नाटिका का मंचन किया जिसे देखकर सब भावविभोर हो गए। इस कार्यक्रम में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी और पद्मश्री पूनम सूरी जी सहित अनेक गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर बच्चों, समस्त स्टाफ और कार्यकर्ताओं के परिश्रम की प्रशंसा की तथा आशीर्वाद दिया।

यज्ञ और शोभायात्रा से हुआ भव्य शुभारंभ

शनिवार 10 फरवरी 2024 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर स्मरणोत्सव का भव्य शुभारंभ उनकी जन्मस्थली पर टंकारा गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी ब्रहमत्व में यज्ञ द्वारा हुआ, जिसमें आर्यजनों ने आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना और प्रार्थना की। इसके उपरांत वहाँ से एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें हजारों की संख्या में आर्य नर-नारी और बच्चे महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज की जय-जयकार करते हुए भव्य, विशाल कार्यक्रम स्थल करसन के आंगन की ओर बढ़े तो संपूर्ण वातावरण में हर्षोल्लास छा गया। सभी के हाथों में ओम धवज, गले में पीत वस्त्र, सिर पर केसरिया पगड़ी पहने आर्यजन अत्यंत शोभायमान हो रहे थे। आर्य महिलाएं अपने सिर पर वेद तथा पौधे रखकर मंगलगान गाती हुई आगे बढ़ रही थीं, इस शोभायात्रा में समस्त आर्यजन अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से भरे हुए थे। एक किलोमीटर से भी लंबे दायरे

- शेष पृष्ठ 7 पर

नागरिकता संशोधन अधिनियम (सी.ए.ए.) लागू करने का स्वागत करता है आर्यसमाज

पाकिस्तान-बांग्लादेश और अफगान के अल्पसंख्यक शरणार्थियों को मिलेगी भारत की नागरिकता

देश हित में अधिनियम लागू करने के लिए भारत सरकार को हार्दिक शुभकामनाएं

नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA)- 2019 नियमों की अधिसूचना सोमवार 11 मार्च 2024 को जैसे ही जारी की गई वैसे ही पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के शरणार्थियों की खुशी से बाँछे खिल गई। भारत सरकार के इस बड़े और न्यायसंगत फैसले का स्वागत करते हुए आर्य समाज ने अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की है। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि आज का दिन बड़ा एतिहासिक और प्रसन्नता देने वाला है, जो लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों तथा रीति रिवाजों का गला घोटकर

पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में रहने को मजबूर थे, जहाँ उन्हें इस दमघोंटू वातावरण में मजबूरी में रहना पड रहा था और वे अपने भारत में आकर भी उपेक्षा के शिकार हो रहे थे, अब उन्हें यहाँ पर सिर उठाकर जीने का अवसर मिलेगा। वे सभी अपने भाई- बंधु भारत की मुख्यधारा से जुड़कर राष्ट्र और मानव सेवा के मर्म को समझेंगे और उनका जीवन भी विकसित होगा।

हालाँकि आर्य समाज हमेशा से हिन्दू शरणार्थियों के सुख-दुख में साथ खड़ा रहा है। पर्व त्योहारों पर भी लगातार उनकी बस्तियों में जाकर हवन करना उनकी सेवा सहायता करना और उनके बच्चों को उपहार देना, पढ़ने की सामग्री देना आदि कार्य लगातार आर्य समाज करता रहा है किन्तु जो सबसे बड़ी पीड़ा थी, उसका आज भारत सरकार ने समाधान किया है, इसका हम दिल की गहराइयों से स्वागत करते हैं और सभी शरणार्थियों के उज्जवल भविष्य के लिए ईश्वर से मंगल कामना करते हैं। इस अवसर पर सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने भी भारत सरकार को बधाई देते हुए इस महत्वपूर्ण निर्णय को एक मील का पत्थर बताया और सभी शरणार्थियों को शुभकामनाएँ प्रदान की। आर्यसमाज की ओर से 12 मार्च 2024 को उन सभी को शरणार्थियों की बस्तियों में दिल्ली सभा की ओर से यज्ञों के आयोजन किए गए और सभी को इस बारे में समाज के एक प्रचारकों ने जाकर बधाई दी।

इस अवसर पर वहाँ का नज़ारा देखने लायक था सभी हिन्दू शरणार्थियों के चेहरे खिले हुए थे, हर आयु, वर्ग के लोगों में उमंग उत्साह और उल्लास था बिल्कुल ऐसे ही लग रहा था कि जैसे होली से पहले ही खुशियों के रंग सब के जीवन को तरंगित कर रहे हो।

यह सर्वविदित है कि यह भारत का विभाजन मुस्लिमों की अलग राष्ट्र की माँग के कारण हुआ था। तब जिन मुस्लिमों ने भारत छोड़कर अलग देश में रहना चुना हो, उन्हें भारत के नागरिक नागरिकता माँगने का अधिकार अब क्यों दिया जाए, दूसरी ओर सी.ए.ए. का विरोध करने वालों का यह कहना कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के मुस्लिमों के साथ भारतीय नागरिकता देने में भेदभाव नहीं होना चाहिए। उनके लिए एक तर्क यह भी है कि धर्म निरपेक्ष भारत में नागरिकता का फ़ैसला किसी की आस्था के आधार पर नहीं हो सकता। बहरहाल अपने देश में धर्म की राजनीति कोई नई बात नहीं है इसके पक्ष और विपक्ष में लगभग हर पार्टी राजनीतिक लाभ लेना चाहती है। शायद राजनीति में अलग होकर सोचना ज्यादा जरूरी है जो मजबूर लोग पाकिस्तान या बांग्लादेश से भारत आए हुए हैं और उन देशों में वे अल्पंख्यक हैं तथा उनकी वहां संख्या निरन्तर कम होती जा रही है, उनकी समस्याओं का समाधान देश के लिए प्राथमिकता होनी ही चाहिए। हमें भूलना नहीं चाहिए कि विश्वभर में हिन्दुओं के लिए केवल एक भारत ही है, जहां भारतीय संस्कृति के साथ जीने का अधिकार है। और जिन मुस्लिमों को भी इस कानून में सम्मिलित होने की बात की जा रही है, उनमें लिए विश्व में 57 देश हैं जहां वे बहुसंख्यक हैं। जबकि अन्य के लिए केवल एक भारत जहां से उनकी जड़े जुड़ी हुई हैं। - ***सम्पादक***

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के 2 वर्षीय आयोजनों की श्रंखला में पुनः आयोजित

विश्व पुस्तक मेला -2024 वृहद स्तर पर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के 2 वर्षीय आयोजनों की श्रंखला में मानव समाज को सुदिशा देने हेतु वैदिक साहित्य को घर-घर तक पहुंचाने के लिए संकल्पित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 10 से 18 फरवरी 2024 तक प्रगति मैदान नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में 10 विशेष स्टाल लगाए गए। पुस्तक मेले का उद्घाटन श्री अतुल सहगल, श्री सतीश चड्ढा महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा, श्री सुखवीर सिंह आर्य, मंत्री दिल्ली सभा द्वारा किया गया। पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य की खरीदारी दिल खोलकर की गई। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को 20 रूपये में प्रदान किया गया।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्रीमती वीना आर्या जी आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के विशेष आर्थिक सहयोग से 10 स्टाल भव्य रूप से लगाए गए थे। श्री सतीश चड्ढा जी ने पुस्तक मेले को जनसामान्य के लिए आवश्यक बताया। श्री सुखवीर सिंह सह संयोजक ने इसे दिल्ली सभा का सराहनीय कार्य बताया। डॉ. मुकेश आर्य, मंत्री आर्य केंद्रीय सभा ने इस आयोजन को श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की दूरदर्शिता का सफल परिणाम बताया।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य भद्रकाम वर्णी ने पाठकों की शंकाओं का समाधान किया। मेले में इस वर्ष देश भक्ति, देशभक्तों के जीवन, महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित कॉमिक्स की प्रतियोगिता तथा मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, वेदों के प्रचार पर विशेष बल रहा। पुस्तक मेले में हिन्दी के लेखकों, कवियों, वैदिक विद्वानों, गुरुकुलों, आर्य संगठनों, आर्य समाज के अधिकारियों का लगातार आगमन होता रहा। आर्यसमाज के लेखक डॉ. विवेक आर्य भी उपस्थित रहे। आपने पाठकों को आर्ष ग्रंथों के विषय में विस्तार से बताया। इस पुस्तक मेले की सफलता के पीछे वास्तव में कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। श्री प्रेमशंकर मौर्य, छाया जी, शकुंतला पाँचाल व शारदा वर्मा, सुप्रिया, सुषमा, हर्ष आर्या, रवि प्रकाश, पवन कुमार, प्रद्युम्न, उदयवीर, मान्धाता आर्य, गया प्रसाद वैद्य, रवि सूर्यान एवं दिनेश आर्य, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

-डॉ. मुकेश आर्य 'सुधीर', संयोजक

प्रधामन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 11 फरवरी, 2024 को टंकारा में वर्चुअली रूप से भाव स्मरण

राष्ट्र चेतना के ऋषि थे स्वामी दयानन्द : वेदों की ओर लौटो था उनका प्रमुख संदेश

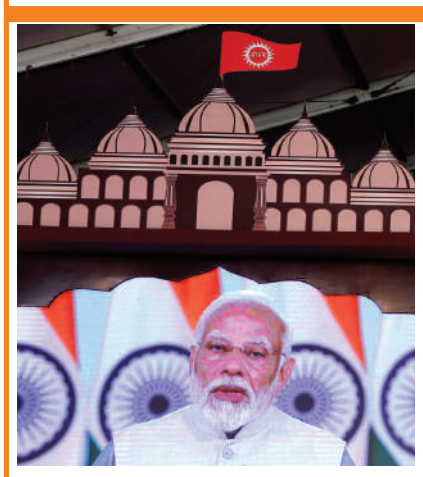

200वें जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव में उपस्थित पूज्य संत, राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, मंत्री परिषद के मेरे साथी पुरुषोत्तम रुपाला जी, आर्य समाज के विभिन्न संगठनों से जुड़े हुए सभी पदाधिकारीगण, अन्य महानुभाव, देवियों और सज्जनों!

देश स्वामी दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती मना रहा है। मेरी इच्छा थी कि मैं स्वयं स्वामी जी की जन्म भूमि टंकारा पहुंचता लेकिन यह संभव नहीं हो पाया। मैं मन से, हृदय से आप सबके बीच ही हूं। मुझे खुशी है कि स्वामी जी के योगदानों को याद करने के लिए, उन्हें जन-जन तक पहुंचाने के लिए आर्य समाज यह महोत्सव मना रहा है। मुझे पिछले वर्ष इस उत्सव के शुभारंभ में भाग लेने का अवसर मिला था, जिस महापुरुष का योगदान इतना अप्रतिम हो, उनसे जुड़े महोत्सव का इतना व्यापक होना स्वाभाविक है। मुझे विश्वास है कि आयोजन हमारी नई पीढ़ी को महर्षि दयानंद के जीवन से परिचित करवाने का प्रभावी माध्यम बनेगा। साथियों मेरा सौभाग्य रहा कि स्वामी जी की जन्मभूमि गुजरात में मुझे जन्म मिला, उनकी कर्मभूमि हरियाणा में लंबे समय तक मुझे भी उसे हरियाणा के जीवन को निकट से जानने समझने का और वहां कार्य करने का अवसर मिला। इसलिए स्वाभाविक तौर पर मेरे जीवन में उनका एक अलग प्रभाव है, उनकी अपनी भूमिका है। मैं आज इस अवसर पर महर्षि दयानंद जी के चरणों में प्रणाम करता हूं, उन्हें नमन करता हूं। उनके करोड़ों अनुयायियों को भी जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई देता हूं। साथियों, इतिहास में कुछ दिन, कुछ क्षण, कुछ पल ऐसे आते हैं जो भविष्य की दिशा को ही बदल देते हैं। आज से 200 वर्ष पहले दयानंद जी का जन्म ऐसा ही अभूतपूर्व पल था। यह वह दौर था, जब गुलामी में फंसे भारत के लोग अपनी चेतना खो रहे थे। स्वामी दयानंद जी ने तब देश को बताया कि कैसे हमारी रूढ़ियों और अंधविश्वास में देश को उलझा हुआ है। इन रूढ़ियों ने हमारे वैज्ञानिक चिन्तन को कमजोर कर दिया था और अध्यात्म से हम लगातार दूर जा रहे थे। ऐसे समय में स्वामी दयानंद जी ने 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान किया। उन्होंने वेदों पर तार्किक व्याख्या की, उन्होंने रुढ़ियों पर खुलकर प्रहार किया और बताया भारतीय दर्शन का वास्तविक स्वरूप क्या है। इसका परिणाम यह हुआ कि समाज में आत्मविश्वास लौटाने लगा, लोग वैदिक धर्म को जानने लगे और उसकी जड़ों से जुड़ने लगे। हमारी सामाजिक कुरीतियों को मोहरा बनाकर अंग्रेजी हुकूमत हमें नीचा दिखाने की कोशिश करती थी, सामाजिक बदलाव का हवाला देकर कुछ लोगों द्वारा अंग्रेजी राज को सही ठहराया जाता था, ऐसे कालखंड में स्वामी दयानंद जी के पदार्पण से जब सब साजिशों को गहरा धक्का लगा। लाला लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे क्रांतिकारियों की पूरी श्रृंखला तैयार हुई जो आर्य समाज से प्रभावित थी। इसलिए दयानंद जी केवल एक वैदिक ऋषि ही नहीं थे वह एक राष्ट्र चेतना के ऋषि भी थे। साथियों, स्वामी दयानंद जी के जन्म के 200 वर्ष का यह पड़ाव उस समय आया है जब भारत अपने अमृतकाल के प्रारंभिक वर्षों में है। स्वामी दयानंद जी भारत के उज्ज्वल भविष्य का सपना देखने वाले संत थे, भारत को लेकर स्वामी जी के मन में जो विश्वास था, अमृत काल में हमें इस विश्वास को अपने आत्मविश्वास में बदलना होगा। स्वामी दयानंद आधुनिकता के पैरोकार थे अर्थात् मार्गदर्शक थे, उनसे प्रेरणा लेते हुए आप सभी को भी, हम सभी को भी अमृत काल में भारत को आधुनिकता की तरफ ले जाना है। हमारे देश को, हमारे भारत को विकसित भारत बनाना है। आज आर्य समाज के देश और दुनिया में ढाई हजार से ज्यादा स्कूल हैं, कॉलेज और यूनिवर्सिटी हैं, 400 से ज्यादा गुरुकुलों में विद्यार्थियों को शिक्षित प्रशिक्षित कर रहे हैं। मैं चाहूंगा कि आर्य समाज 21वीं सदी के इस दशक में एक नई ऊर्जा के साथ राष्ट्र निर्माण के अभियानों की जिम्मेदारी उठाए। यह स्थान महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जन्मभूमि है, प्रेरणा भूमि है, चैतन्य भूमि है, यहां से प्रेरणा लेकर हम भारत को निरंतर सशक्त करेंगे तो यह महर्षि दयानंद जी को हमारे पुण्य श्रद्धांजलि होगी। भारतीय चरित्र से जुड़ी शिक्षा व्यवस्था आज की बड़ी जरूरत है, आर्य समाज के विद्यालय इसको राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश में अब इसे विस्तार दे रहे हैं। हम इन प्रयासों से समाज को जोड़ें, यह हमारी जिम्मेदारी है। आज चाहे लोकल के लिए वोकल ही पर्यावरण के लिए देश के प्रयास हो, जल संरक्षण, स्वच्छ भारत अभियान हो, ऐसे अनेक अभियान हों, आज की आधुनिक जीवन शैली में प्रकृति के लिए न्याय सुनिश्चित करने वाला मिशन हो, हमारे मिलेट्स, श्रीअन्न हो, इसे पहचान देना, योग हो, फिटनेस हो, इन सभी क्षेत्रों में हम आगे बढ़ रहे हैं। आर्य समाज के शिक्षा संस्थान, इनमें पढ़ने वाले विद्यार्थी, सब मिलकर के एक बहुत बड़ी शक्ति है। यह सब बहुत बड़ी भूमिका निभा सकते हैं, आपके संस्थानों में जो विद्यार्थी हैं उनमें बड़ी संख्या ऐसे युवकों की भी है जो 18 वर्ष पार कर चुके हैं, उन सभी का नाम वोटर लिस्ट में हो, वह मतदान का महत्व समझें, यह दायित्व समझाना भी आप सभी वरिष्ठजनों की जिम्मेदारी है। इस वर्ष से आर्य समाज की स्थापना का 150वां वर्ष भी आरंभ होने जा रहा है, मैं चाहूंगा कि हम सब इतने बड़े अवसर को, अपने प्रयास से अपनी उपलब्धियां उसे सचमुच में यादगार बनाएं। साथियों प्राकृतिक खेती भी एक ऐसा विषय है जो सभी विद्यार्थियों के लिए समझना, जानना जरूरी है। हमारे आचार्य देवव्रत जी तो इस दिशा में बहुत मेहनत कर रहें है। महर्षि दयानंद जी के जन्म क्षेत्र से प्राकृतिक खेती का संदेश पूरे देश के किसानों को मिले, इससे बेहतर और क्या होगा? साथियों, महर्षि दयानन्द ने अपने दौर में महिलाओं के अधिकारों और उनकी भागीदारी की बात की थी। नई नीतियों के जरिए, ईमानदार कोशिशें के जरिए, देश आज अपनी बेटियों को आगे बढ़ा रहा है। कुछ महीने पहले ही देश ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम पास करके लोकसभा और विधानसभा में महिला आरक्षण सुनिश्चित किया गया है। देश को इन प्रयासों से जंगल, जल, जमीन को जोड़ना ही आज महर्षि को सच्ची श्रद्धांजलि होगी और साथियों इन सभी सामाजिक कार्यों के लिए आपके पास भारत सरकार के नवगठित युवा संगठन की शक्ति भी है। देश के सबसे बड़े और सबसे युवा संगठन का नाम 'मेरा युवा भारत-माई भारत' है। दयानंद सरस्वती जी के सभी अनुयायियों से मेरा आग्रह है कि वह डी.ए.वी. शैक्षिक नेटवर्क से भी विद्यार्थियों को माई भारत से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करें। मैं आप सभी को महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती पर पुनः शुभकामनाएं देता हूं। एक बार फिर महर्षि दयानंद जी को, आप सभी संतों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं।

टंकारा में ज्ञान ज्योति तीर्थ स्मारक के निर्माण से होगा नई चेतना का उदय - आचार्य देवव्रत, राज्यपाल

टंकारा में आयोजित महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव के तीन दिवसीय भव्य सम्मेलनों में गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने उपस्थित आर्यजनों को चार बार संबोधित किया। आपने देश विदेश से पधारे आर्यजनों के विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज मैं जो कुछ भी हूँ आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की देन है। महर्षि की 200वीं जयंती का इतना बड़ा आयोजन टंकारा में पहली बार हो रहा है। आचार्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के मानवजाति के ऊपर किए गए महान उपकारों को स्मरण करते हुए उनकी विचारधारा को आगे बढाने का संदेश दिया। आपने इस महान अवसर पर बताया कि आप गुजरात के राज्यपाल पद की शपथ लेने के बाद जब पहली बार टंकारा आए तो अपने गुरु दयानंद जी की जन्मभूमि के दर्शन को लेकर बहुत उत्साहित थे लेकिन इस महान स्थान की दयनीय स्थिति को देखकर आपको अत्यंत कष्ट हुआ। आपने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने महर्षि की जन्मभूमि को ज्ञान ज्योति तीर्थ बनाने की प्रेरणा दी है और उनकी महर्षि के प्रति अगाध श्रद्धा है। महर्षि की जन्मभूमि पर बनने वाले ज्ञान ज्योति तीर्थ से देश और दुनिया में नई ऊर्जा और नई चेतना का उदय होगा।

सज्जनता, नम्रता और सादगी की प्रतिमूर्ति भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी, मुख्यमंत्री आदरणीय भूपेन्द्र भाई पटेल जी, श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, आदरणीय पदमश्री पूनम सूरी जी अध्यक्ष डीएवी प्रबंधकर्त्री समिति, ज्ञान ज्योति महोत्सव समिति के अध्यक्ष, आदरणीय श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, उड़ीसा से पधारे स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी एवं मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य महानुभाव अतिथियों, पूरे भारतवर्ष और विदेश से पधारे हुए सभी आर्य भाई और बहनों।

आज हम सब लोग भारत के आदरणीय राष्ट्रपति जी के पधारने और उनकी गरिमामयी में उपस्थिति से सब हृदय से गदगद हैं, सब आह्लादित हैं और उनके सम्मान में सभी आदर भाव से नमन करते हैं। आदरणीय राष्ट्रपति जी ऋषि दयानंद और उनके द्वारा निर्मित आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही एक राष्ट्रवादी संस्था है। इसने अपने प्रारंभ काल से ही भारत के उत्थान का एक लक्ष्य लिया है। स्वामी दयानंद ने आर्य समाज के 10 नियम लिखे हैं उनमें छठा नियम - 'संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना' इन तीनों बिन्दुओं पर आर्य समाज के विद्वानों ने परंपरा को आगे बढ़ाया। जिस समय इस देश में महिलाओं को पढ़ने अधिकार नहीं था, उस समय दयानन्द सरस्वती ने इन विचारों को रद्दी की टोकरी में फेंकने का काम किया और उन्होंने यह शब्द बोले थे, जो उन्होंने आर्य समाज के नियम में जो लिखा - 'प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।' यह स्वामी दयानंद का उद्बोधन था सारी मानव जाति को उन्होंने समरसता का पाठ दिया। मनुष्य-मनुष्य में भेद दूर किया और इसी के साथ उन्होंने राष्ट्रवादी व्यवस्था को समृद्ध करने के लिए गोकृषिआदि रक्षिणी सभा की स्थापना की। वे जानते थे कि गुलामी ने भारत को निर्धन बना दिया है उन्होंने उस काल में स्वदेशी का नारा दिया। भारत की आजादी का बिगुल बजाते हुए बहुत बड़ी क्रांतिकारियों, विचारों का निर्माण किया। 1857 की क्रांति से लेकर भारत की आजादी के काल तक जितने भी क्रांतिकारी हुए वह सब स्वामी दयानंद से प्रेरित थे। उन्होंने भारत की आध्यात्मिक चेतना को जगाया, वेदों की संस्कृति की पुनर्स्थापना करने का काम किया, समाज में जो अज्ञान, अंधकार, पाखंड फैला हुआ था, उसे दूर किया, हर वह कार्य ऋषि दयानंद ने किया जिससे हमारा देश भारत

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की मध्यम दशा

गतांक से आगे -

महर्षि दयानन्द ने मेले पर एकत्र हुए हिन्दू-समाज को देखा और सम्पूर्ण समाज को एक ही बीमारी का शिकार पाया। क्या शैव, क्या वैष्णव, क्या संन्यासी, क्या वैरागी, सब एक ही धुन में मस्त हैं, सब एक ही लीक के राही हैं। सुधार की प्रारम्भिक दशा में महर्षि जी ने शैवों को वैष्णवों से कुछ ऊंचा ठहराया था: कुम्भ पर देखा कि सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। न वे पूरे ज्ञानी हैं और न ये अधिक अज्ञानी हैं। जो थोड़ा-सा साम्प्रदायिक भेद हृदय में विद्यमान था, गंगा के विमल जल से वह भी धुल गया।

कुम्भ के समारोह में शास्त्रपारंगत महर्षि दयानन्द की प्रसिद्धि शीघ्र ही फैल गई। गृहस्थ और साधु लोग निडर सुधारक के तेजस्वी भाषण सुनने के लिए आने लगे। कई विद्वानों ने योग्यता की परीक्षा करके उत्सुकता को दूर किया। यहां पहले-पहल महर्षि दयानन्द जी की काशी के प्रसिद्ध विशुद्धानन्द जी से मुठभेड़ हुई। विवाद पुरुष सूक्त पर था। स्वामी विशुद्धानन्द जी ने **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत** इत्यादि मन्त्र से ब्राह्मण आदि वर्णों की ब्रह्मा के मुख से उत्पत्ति बतलाई और महर्षि दयानन्द जी ने शब्दार्थ-बल से यह सिद्ध करने का यत्न किया कि इस मन्त्र में ब्राह्मण को मुख के समान कहा है, मुख से उत्पन्न नहीं कहा। काशी के दिग्गज पण्डित के साथ एक युवक साधु की ऐसी बढ़िया टक्कर का जनता पर अवश्य ही बड़ा प्रभाव हुआ होगा।

कुम्भ का मेला हो गया। इस मेले में महर्षि के डेरे पर कई साधु और शिष्य ठहरे हुए थे। सबके लिए भोजन आदि का वहीं प्रबन्ध था। उस समय की रीति के अनुसार एक संघ के मुखिया साधु को सब प्रकार की जिस सामग्री की आवश्यकता होती थी, महर्षि जी के पास भी इस समय तक वह विद्यमान थी। मठाधीशों और महन्तों की दुर्दशा देखकर महर्षि जी का विशुद्ध हृदय जल उठा। उन्हें अपनी थोड़ी-सी सामग्री भी बोझिल प्रतीत होने लगी। उनके हृदय ने कहा कि यदि त्यागियों की विलासिता का नाश करना है, तो पहले स्वयं सर्वत्यागी बनना होगा। धर्म की बिगड़ी हुई दशा का अनुभव करके उन्हें अपने शरीर पर धारण करने के थोड़े-से कपड़े भी बहुत प्रतीत होने लगे। साधु की संक्षिप्त सामग्री भी कैदखाने की जंजीर प्रतीत होने लगी। गृह त्यागी महर्षि दयानन्द ने सर्वत्याग करने का निश्चय कर लिया।

डेरे पर जो कुछ भी था, भिखरियों को बांट दिया गया। महर्षि दयानन्द ने एक कौपीन रख ली, शेष सब सामग्री दरिद्रों में वितीर्ण कर दी। मलमल का थान और महाभाष्य का ग्रन्थ गुरु जी की सेवा में मथुरा भेज दिया। इस प्रकार सांसारिक वस्तुओं के इस हल्के से बन्धन को काटकर सर्वत्यागी स्वतन्त्र महर्षि दयानन्द मनुष्यजाति के बन्धनों को काटने के लिए सन्नद्ध हुआ। गंगा के पार, चण्डी के पर्वत के नीचे रेतीले किनारे पर कुछ समय तक तपस्या करके उन्होंने अपने-आपको उस महायुद्ध के लिए और भी अधिक तैयार किया, जिसकी ओर भगवान् की इच्छा उन्हें खींचे ले जा रही थी।

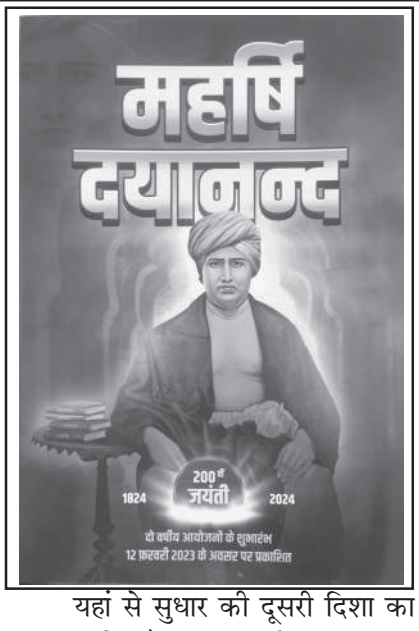

यहां से सुधार की दूसरी दिशा का आरम्भ होता है। सुधारक की दृष्टि अधिक विस्तृत हो गई है, रहे-सहे रूढ़ि के बन्धन टूट गए हैं और निसर्ग से ही उज्ज्वल प्रतिभा वास्तविक संसार की घटनाओं से रगड़ खकर और भी अधिक उज्ज्वल हो उठी है।

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित
जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

Swami Dayanand sent a message to the King of Kashi, "If you want to know finally who is right and who is wrong, send your Pandits for debate. So the King advised the Pandits to get ready for debate. They said "Swami Dayanand is wise Pandit of Vedas, and gives reference of vedas. We should be given to prepare and search proofs from Vedas. So they were given permission for 15 days. They kept them busy in getting well prepared. Kartik Shudi 12 was decided the day for debate. Madho Bagh was decided for the program as Swamiji refused to move away from there. Period of 15 days was over.

The king arranged for needed transport for the Pandits to reached Madho Garden for debate. It was the day of Examination for the Pandits. Their future depended upon their success. There was Swami Dayanand wearing copeen (underwear) only on the other side for debate. Vidya was his weapon, Satya (Truth) was his Fort and Ishwar was his helper. On the other side there was a strong group of Pandits. They had sword of Vidya with them, but it had become unuseful as they had no independent wisdom other than the wrong tradition. Truth had already been covered with the money. Idols had taken place of God on one side and on the other side the King was also considered as God. Where as Swami Dayanand was sitting quite fearless and without any confusion considering God as his helper and Satya as his weapon, on the other hand the Pandits were considering their Vidya and helping hand as weak. So they were trying so many ways to be confident. But Dayanad was not a stream of fire that could be blown with air. 99% of the public coming to the place of debate believed in Idol worship. They were not going there to observe and decide what was true and what was wrong. But they were quite confident of about victory of their Pandits. They were told that Dayanand was a great 'Nastik' who did not believe in worship and he abuses Vishwa Nath in Vishwa Nathpuri (Kashi). Among them there were nice persons as well as very bad persons. Nice persons were wishing success for their Pandits and others were planning to attack the Nastik with stones and bricks. The arrangement of the debate was under the control of Raghu Nath Sahay, the Kotwal (S.H.O.) of the city. He was a nice person. He had given the system that only Pandit could take part in the debate at a time so that the program may go on peacefully and they should not sit surrounding Swami Dayanand. There where three seats placed on some height. One was for Kashi Naresh, the second for Swamiji and third for the Pandit taking part in debate.

There was a large number of opponents and there were so many gundas! The well wishers of Swamiji were quite afraid. One of them discussed about all that, Swamiji pacified him in the name of belief in God and fearlessness saying, "There is one God and one Dharm only. There is no one else to be get afraid. Let them all come. I will face them." Pandit Jawahar Das felt that Swamiji had already guessed what he had observd and felt fearless, undoubtful Sanyasi was ready for bearing the attack from the opponents and was smiling. The brave lion, who can challenge the lion in his cave, can also hear and bear his roar.

To be Continue.....

पृष्ठ 2 का शेष

टंकारा ऋषि भूमि तीर्थ स्थान जरुरी क्यों ?

मसलन कहने का अर्थ है कि देश के वे प्रमुख स्थान जो कभी ज्ञान-ध्यान विज्ञान सांसारिक कष्टों से मुक्ति के केंद्र थे आज वो परिक्रमा, पूजा-पाठ, स्नान, मुंडन भूत-प्रेत उतारने आदि कार्यों के अड्डे बन चुके हैं। ज्ञान पाखंड में बदल चुका है, विज्ञान अंधविश्वास में। इसलिये हम बड़े ही दु:ख के साथ कहते कि अब भारत में को तीर्थ नहीं है।

भारत को अब एक ऐसा तीर्थ चाहिए जहाँ सन्देश मिल सके कि प्रकृति अनन्त है, अत: वेद भी अनन्त है। परमेश्वर का ध्यान भी तीर्थ रूप है। शिक्षक भी तीर्थ है और शिक्षणालय भी तीर्थ है। ज्ञान द्वारा स्वयं को जानना। आत्मज्ञान में सहायक होने वाले तत्व ही सच्चे तीर्थ हैं।

तीर्थ का यथार्थ लाभ उनको ही मिलता है, जो इन्द्रियनिग्रह युक्त हैं, क्रोधादि आवेग से जो विचलित नहीं होते तथा जो सभी प्राणियों के हित में तत्पर रहते हैं। तीर्थ यात्रा कोई विजय पाने के लिये नहीं है, ये तो आत्मसमर्पण करने के लिये है। यही वो तीर्थ हैं जहाँ मनुष्य सिर्फ मनुष्य बन सके। वो अंधविश्वास, कुरीति से दूर हो, वो समस्त समाज के हित में अपना हित समझे। जहाँ छुआछूत और भेदभाव ना हो। अत: इसके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सन्देश ही भारत को समस्त कष्टों से दूर कर सकते है। भला इस सबके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मस्थान टंकारा से उपयुक्त भला कौनसा स्थान हो सकता है? - ***सम्पादक***

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव

पृष्ठ 3 का शेष

में फैले हुए अनुशासित और व्यवस्थित आर्यजनों ने महर्षि की जन्मभूमि पर निष्ठापूर्वक उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता और आभार प्रदर्शित किया।

ध्वजारोहण एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञाग्नि की स्थापना

इस विशाल शोभायात्रा के समापन साथ ही कार्यक्रम स्थल पर माननीय आचार्य देवव्रत जी, पदमश्री पूनम सूरी जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्री योगेश मुंजाल जी और अन्य महानुभावों ने धवजारोहण किया। इसके उपरांत महर्षि की जन्मस्थली से लाई गई यज्ञाग्नि को प्राचीन आश्रमों की झलक दिखाती विशाल यज्ञशाला के यज्ञकुंड में स्थापित किया गया। और इस तरह चतुर्वेद परायण यज्ञ का प्रारम्भ हुआ। माननीय आचार्य देवव्रत जी, सपत्नीक, पदमश्री पूनम सूरी जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्री योगेश मुंजाल जी एवं अनेक अन्य आर्य समाज के अधिकारी और कार्यकर्ताओं ने आहुति दी। ज्ञात हो कि यह यज्ञ लगातार तीन दिनों तक निरंतर चलता रहा और यज्ञ की पूर्णाहुति टंकारा गुरुकुल में 9 मार्च को विधिवत की जाएगी। इस यज्ञ में प्रतिदिन हजारों आर्य नर नारी आहुति देते रहे और यज्ञ की ज्योति जलती रहे का उदघोष साकार होता रहा।

अब अवसर था मुख्य पांडाल में कार्यक्रम के शुभारंभ का। पूरा पांडाल आर्यजनों से भरा हुआ था। मंच के पीछे बना हुए बैकड्राप के मध्य में महर्षि का चित्र और 200 का लोगो, चारो वेदों की वृहद आकृति सबके मन को आकर्षि कर रही थी। सर्वप्रथम आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासियों का स्वागत और सम्मान करके आशीर्वाद लिया गया और इस सत्र को आशीर्वाद सम्मेलन का नाम दिया गया। आर्य कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की कन्याओं ने सस्वर वेद मंत्रों के पाठ के साथ समारोह का शुभारम्भ हुआ। आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने महर्षि की जन्मभूमि को नमन करते हुए सभी आर्यजनों को इन पावन क्षणों की बधाई दी। आपने आचार्य देवव्रत जी को टंकारा में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम का सूत्रधार बताते हुए पूरे वर्ष के आयोजनों की सफलता के लिए भी उपस्थित आर्यजनों के विशाल समूह को बधाई दी। आपने महर्षि के ऋणि मानव समाज को उऋण होने के लिए उनकी शिक्षाओं पर चलने की बात कही। आपने इस अवसर का महत्व दर्शाते हुए कहा कि जब महर्षि की 100वीं जयन्ती थी तब हमारे महापुरुषों ने अगले 100 वर्षो की योजना बनाई, जिसका परिणाम आज हम 200वीं जयन्ती मना रहे हैं और आज हमें 300वीं जयन्ती की भव्य योजना पर विचार करना है जिससे आगे आने वाले 100वर्षो में आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए ऐसी योजना निर्धारित करें जिससे महर्षि दयानन्द की शिक्षाएं और आर्य समाज की विचारधारा जन-जन तक पहुंचे और विश्व का कल्याण संभव हो। इस अवसर पर माननीय आचार्य श्री देवव्रत जी ने देश-विदेश से पधारे आर्यजनों के विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज मैं जो कुछ भी हूँ वह आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की देन है। महर्षि की 200वीं जयन्ती का इतना बड़ा आयोजन टंकारा में पहली बार हो रहा है। आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मानवजाति के ऊपर किए गए महान उपकारों को स्मरण करते हुए उनकी विचारधारा को आगे बढाने का संदेश दिया। आपने इस महान अवसर पर बताया कि आप गुजरात के राज्यपाल पद की शपथ लेने के बाद पहली बार टंकारा आए तो अपने गुरु दयानन्द जी की जन्म भूमि के दर्शन को लेकर बहुत उत्साहित थे लेकिन इस महान स्थान की दयनीय स्थिति को देखकर आपको अत्यंत कष्ट हुआ। आपने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने महर्षि की जन्मभूमि को ज्ञान ज्योति तीर्थ बनाने की प्रेरणा दी है और उनकी महर्षि के प्रति अगाध श्रद्धा है। महर्षि की जन्मभूमि पर बनने वाले ज्ञान ज्योति तीर्थ से देश और दुनिया में नई ऊर्जा और नई चेतना का उदय होगा।

पद्मश्री पूनम सूरी जी ने महर्षि का गुणगान करते हुए कहा कि लाहौर से दो कमरों से प्रारंभ हुआ डीएवी आज पूरे भारत में डीएवी के 900 से अधिक शिक्षण संस्थान संस्थानों द्वारा स्कूली शिक्षा, नर्सिग, इंजीनियरिंग, आयुर्वेद, क़ानून, फिजियो थैरेपी आदि की शिक्षाएं दी जा रही हैं, एक लाख शिक्षक और स्टाफ सहित 34 लाख विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यह सब महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा का ही फल है। उन्होंने महर्षि की जन्मभूमि से आर्य समाज का संदेश पूरे विश्व में फैलाने तथा आर्य गुणों से समाज को अलंकृत करने का संदेश दिया। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्बोधन में मानव समाज को नई जागृति प्रदान करने का सन्देश दिया।

कार्यक्रम में तीनों दिन आर्यो का अनुपम मेला लगा रहा। जिसमें हर आयु वर्ग के स्त्री-पुरुष और बच्चे सम्मिलित रहे। सुबह योगासन व्यायाम से लेकर, यज्ञ, योग, स्वध्याय और विशाल सम्मेलनों में आर्य समाज के विद्वानों, संन्यासियों, आर्य नेताओं, राजनेताओं और स्वयं भारत राष्ट्र की राष्ट्रपति माननीय श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी ने महर्षि दयानन्द जी को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर नमन किया। इस अवसर पर सभी महानुभावों को स्मृति चिन्ह दकेर सम्मानित किया गया। सामूहिक भजन प्रस्तुत किए गए, इस अवसर पर उपस्थित मंच द्वारा बारह पुस्तकों का विमोचन किया गया जिनमें परिवर्तन, महर्षि की जीवनी, प्राकृतिक खेती, नशा मुक्ति, अंधाविश्वास निवारण, चुनौतियों का चितन, गले लगाइए, रिश्ते बचाइए आदि प्रमुख थीं।

पृष्ठ 5 का शेष

पुन: विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित हो। हम सबको आज प्रसन्नता है और विशुद्ध राष्ट्रवादी संस्था आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का गुजरात की धरा पर जन्म हुआ, हमें गर्व है कि इसने समय समय पर महापुरुषों को जन्म दिया और वर्तमान में ऐसे यशस्वी प्रधानमंत्री देश को दिए हैं जिन्होंने भारत की गौरव और गरिमा को दिग-दिगंत में, पूरे विश्व में पहुंचाने का काम किया।

भाइयों और बहनों यह छोटा काम नहीं है कि रूस और यूक्रेन का युद्ध चल रहा है, भारत के 20000 बेटे-बेटियां वहां फंसे हुए थे। इस देश की गरिमा और गौरव को विश्व में इससे ज्यादा और क्या बढ़ाया जा सकता है कि भारत का प्रधानमंत्री, दो दुश्मन देश, जहां बम बरस रहे हैं, गोली बरस रही हैं, युद्ध चरम सीमा पर है लेकिन मेरे देश का प्रधानमंत्री दोनों राष्ट्रीय अध्यक्षों को युद्ध विराम की बात कहता है और युद्ध विराम होता है और भारत के 20000 बेटे-बेटियां ही बाहर नहीं आते उनके साथ पाकिस्तान जैसे देश के लोगों को भी तिरंगा उठाना पड़ा और भारत की शरण में आना पड़ा। यह गरिमा और गौरव है भारत का। स्वामी दयानंद सरस्वती इसकी समृद्धि देखना चाहते थे, इसको उन्नत भारत देखना चाहते थे, आज इस दिशा में भारत आगे बढ़ रहा है। आप देश के किसी भी कोने में जाइए, वहां ऐसे चमकते हुए रोड आपको मिलेंगे जो आज अमेरिका के पास भी नहीं हैं। आज अपने एयरपोर्ट देखेंगे, उनके एयरपोर्ट तो बूढ़े हो गए हैं हमारे सारे एयरपोर्ट जवान बने हुए हैं। हमारे यहां रेल की कनेक्टिविटी को देखिए, वंदे भारत हर 20 दिन में एक नई आ रही है। भाईयों और बहनों, यहां पर औद्योगिक क्रांति आज भारत विश्व की दसवीं से पांचवी अर्थव्यवस्था बन चुका है और तीसरी बनने की तैयारी में है। भारत के प्रधानमंत्री ने अमृतकाल, 1947 तक एक विकसित भारत के रूप में आगे बढ़ाने का कार्य किया है। भारत आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़े इस प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न हो गई हैं। इस देश का हर आर्य आज गदगद है, हर आर्य इस देश की प्रगति और विकास की दिशा में हर तरह से सहयोग के लिए तैयार है। हम ऐसे समय में ऋषि दयानंद सरस्वती का 200वां जन्म दिवस मना रहे हैं। उन्होंने जो आदेश हमें दिया था मेरा देश आध्यात्मिक रूप से उन्नत हो, भौतिक रूप से उन्नत हो, सामाजिक रूप से उन्नत हो, यहां वेद की ऋचाएं गूंजायमान हो, यहां पर लोग सात्विक हो। किसी भी प्रकार की बुराइयों से दूर हो, ऐसा एक सभ्यशालीन समाज मेरे देश का बने। आज यह सब कुछ तेजी से बढ़ रहा है, हम इस सारे मिशन में मजबूती से भारत को पुन: वही वैभव दिलाने में आगे बढ़ें। हमने तीन दिनों तक विश्व स्तरीय भव्य सम्मेलनों में महर्षि दयानन्द के विचारों का स्मरण किया, इसके साथ ही आप सब के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए आने वाले समय में हमनें मिलकर दयानंद, आर्य समाज, वेद के विचारों को जनमानस तक पहुंचाने के अभियान को आगे बढ़ाना है। धन्यवाद।

शोक समाचार

श्री रविन्द्र मेहता जी का निधन : पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के पूर्व प्रधान एवं प्रकाशक श्री रविन्द्र मेहता जी का 17 जनवरी को निधन हो गया।

श्री बृजेश गौतम को पितृशोक : वैदिक विद्वान श्री बृजेश गौतम जी के पूज्यपिता श्री रामचरण गौतम जी का 22 जनवरी को में निधन हो गया।

श्री अनिल तनेजा जी का निधन : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा जी का 3 फरवरी, 2024 को अकस्मात निधन हो गया।

श्री शीशपाल कौशिक जी का निधन : आर्यसमाज सागरपुर के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं दिल्ली सभा की पुस्तक मेला समिति के सदस्य श्री शीशपाल कौशिक जी का 5 फरवरी, 2024 का निधन हो गया।

डॉ. सत्यदेव गुप्ता जी का निधन : आर्यसमाज एन.एच.3 फरीदाबाद के संरक्षक डॉ. सत्यदेव गुप्ता जी का 11 फरवरी, 2024 को आर्यसमाज के प्रांगण में 200वें जयन्ती कार्यक्रम के दौरान ब्रेन हैमरेज से निधन हो गया।

श्रीमती सुदर्शन लता चौधरी जी का निधन : आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी के पूर्व प्रधान स्व. श्री ललित चौधरी जी की धर्मपत्नी एवं उप प्रधान श्री अजय चौधरी जी की माताजी श्रीमती सुदर्शन लता चौधरी जी का 2 मार्च, 2024 को निधन हो गया।

श्री रामस्वरूप शास्त्री जी का निधन : आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं संरक्षक श्री रामस्वरूप शास्त्री जी का 8 मार्च, 2024 को निधन हो गया। 9 मार्च को पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किया गया।

श्री लवदेव कथूरिया जी का निधन : आर्यसमाज तिलक नगर, नई दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री लवदेव कथूरिया जी का 9 मार्च, 2024 को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार तिलक नगर शाहपुरा शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 मार्च, 2024 से रविवार 17 मार्च, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 14-15-16/03/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 मार्च, 2024

ओ३म्

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर आर्य प्रतिनिधि सभा, अमरीका द्वारा आयोजित भव्यातिभव्य

अमरीका चलो अमरीका चलो

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

न्यूयार्क, दिनांक 18-19-20-21 जुलाई 2024

सम्माननीय भाईयों और बहिनो!

भारत के सैकड़ों आर्यजन इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने पहुँच रहे हैं। आप भी अपना रजिस्ट्रेशन शीघ्र ही करायें। इस अवसर पर जो यात्री अमरीका घूमना फिरना चाहते हैं उनके लिये दो प्रकार की यात्राओं का आयोजन किया गया है। ध्यान रहे कि अन्य देशों की अपेक्षा अमरीका की यात्रा महंगी रहती है क्योंकि केवल एअर टिकिट का मूल्य ही लगभग एक लाख पच्चीस हजार चल रहा है।

प्रथम टूर - 5 रात्रि 6 दिन, व्यय-राशि 2,35,000/- रुपये
17 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)
3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क
इस राशि में निम्नलिखित खर्च शामिल हैं
हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%

द्वितीय टूर - 7 रात्रि 8 दिन, व्यय-राशि 2,75,000/- रुपये
15 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)
2 रात्रि नियाग्रा, 3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क
इस राशि में निम्न लिखित खर्च शामिल हैं
हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्स्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%

उक्त यात्रा में जाने वाले सभी इच्छुक यात्रीगण शीघ्र ही 50,000/- (पचास हजार) का बैंक ड्राफ्ट Thomas Cook (India) Ltd. के नाम का बनवाकर निम्नलिखित पते पर भेजें।

न्यूयार्क आर्य महासम्मेलन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

टूर रजिस्ट्रेशन के लिये तथा यू.एस. वीजा के लिये कृपया
श्री संदीप आर्य से मो.नं. 9650183339 पर सम्पर्क करें

कृपया नोट करें: जो यात्री वीजा मिलने के बाद भी यदि टूर में नहीं जायेंगे उनकी 50,000/- की एडवांस राशि वापस नहीं होगी। एडवांस राशि केवल उन्हीं की वापस होगी जिन्हें यू.एस. वीजा नहीं मिलेगा।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — **सत्यार्थ प्रकाश** — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 | विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 | पॉकेट संस्करण

विशिष्ट पॉकेट संस्करण | स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 | उपहार संस्करण

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द | सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

खेद व्यक्त – खेद है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव : टंकारा के आयोजन के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक के गत अंक दिनांक 22 जनवरी से 28 जनवरी, 29 जनवरी से 4 फरवरी, 5 फरवरी से 11 फरवरी, 12 फरवरी से 18 फरवरी, 19 फरवरी से 25 फरवरी एवं 4 मार्च से 10 मार्च, 2024 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। – *सम्पादक*

प्रतिष्ठा में,

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर शुभकामनाओं के बैनर अपने घर, आर्य समाज और क्षेत्र में अच्छे स्थानों पर लगवायें

साइज 3 x 2 फुट

मूल्य ₹250 में 25 बैनर

वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली
www.vedicprakashan.com / +91-9540040339

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह